ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज के डॉ. एके पांडे के नाम दर्ज हुआ कीटाणु रोधी पेटेंट

फ़रीदाबाद (म.मो.) मेडिकल कॉलेज के रजिस्ट्रार एकेडमिक डॉक्टर अनिल कुमार पांडे ने अपनी कड़ी मेहनत के बल पर बैक्टीरिया से सम्बन्धित अपने शोध द्वारा की गई खोज को अपने नाम से पेटेंट कराया है। फ़िलहाल ये पेटेंट साउथ अफ्रीका के प्रिटोरिया स्थित एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान में 8 अक्टूबर 2021 को दर्ज हुआ है। इसे बौद्धिक सम्पदा एक्ट के तहत पेटेंट कराया गया है। इसके लिये भारत में भी आवेदन कर दिया गया है जो लगभग स्वीकार हो चुका है। इसके बाद अमेरिका में आवेदन किया जायेगा। अमेरिका में आवेदन करने का मतलब लाखों रुपये का खर्चा होता है, जबकि प्रिटोरिया में यह काम मात्र 30000 रुपये में हो गया।

इस शोध के द्वारा डॉ. पांडे ने वह मैकेनिजम खोज निकाला है जिसके द्वारा किसी मरीज के अंदर मौजूद किटाणु में इतनी गतिरोधात्मकता पनप जाती है कि वह एंटीबायोटिक दवाईयों से भी नहीं मरता। ऐसे में डॉ. एक से बढ़कर एक ऊंचे स्तर की महंगी एंटीबायोटिक दवायें देते हैं। डॉ. पांडे द्वारा खोजे गये इस मैकेनिजम का लाभ यह होगा कि कीटाणु की गतिरोधात्मक क्षमता को काबू किया जा सकेगा। इसके बाद साधारण से एंटीबायोटिक द्वारा भी कीटाणुओं को समाप्त किया जा सकेगा।

प्रतिष्ठित लेंसेट मेडिकल पत्रिका में प्रकाशित दूसरा शोध

डॉ. पांडे ने दूसरा शोध प्रतिरोधात्मकता को लेकर लिखा है। यह लेख ऐसे ही मेज पर बैठकर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये वर्षों तक खोज-बीन द्वारा एकत्रित आंकड़ों के आधार पर, पूरे सबूतों के साथ लिखा जाता है।

इस में डॉ. पांडे ने वैक्सीनेशन के बाद लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन एवं संकलन किया है। उदाहरण के लिये कोरोना की एक डोज या दो डोज़ या फ़िर

संक्रमित होने के बाद प्रतिरोधात्मकता कितनी बढ़ती है तथा यह कब तक बनी रहती है। इसमें विशेष खोज यह की गई है कि वैक्सीन का प्रभाव शरीर की विभिन्न कोशिकाओं पर क्या पड़ता है? गतिरोधात्मकता बढ़ाने के लिये सबसे महत्वपूर्ण मेमोरी कोशिका एवं उसकी सहायक कोशिकाएं होती हैं। यही वे कोशिका है जिसके द्वारा शरीर में प्रतिरोधात्मकता तैयार होती है। यानी कि यह कोशिका एक ऐसे प्रहरी का काम करती है जो बीमारी के कीटाणुओं की भनक पाते ही प्रतिरोधात्मक जीवाणुओं की सेना को खड़ा कर देती है। यदि यह प्रहरी सोया रहे या मर चुका हो तो शरीर में बीमारी के किटाणुओं का मुकाबला नहीं हो सकता।

इस तरह के शोध कार्य करना केवल तभी सम्भव होता है जब किसी में इस कार्य के प्रति रुचि एवं लगन हो। इसके लिये काम करने वालों को न तो कोई विशेष भत्ता मिलता है न ही कोई प्रोत्साहन। 'मज़दूर मोर्चा' पहले भी कई बार लिख चुका है, कि मेडिकल कॉलेज में केवल वही विशेषज्ञ डॉक्टर आते हैं जिन्हें मरीजों के इलाज के साथ-साथ पढ़ने-पढ़ाने का शौक होता है। इस शौक के लिये डॉक्टर साहेबान चिकित्सा विज्ञान की एक पायदान पर हमेशा के लिये खड़े नहीं रह सकते। इसके लिये वे नित नये अंतर्राष्ट्रीय आविष्कारों, खोजों व मेडिकल पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले शोधों को न केवल पढते रहते हैं बल्कि उनसे प्रेरित होकर खुद भी इसी तरह के काम करते रहते हैं।

फ़िलहाल तो इस क्षेत्र में डॉ. पांडे द्वारा किये गये कार्य ही सामने आये हैं, लेकिन माना जा रहा है कि कई अन्य डॉक्टर साहेबान भी चुपचाप अपने कार्य में जुटे हुए हैं। ईएसआई कार्पोरेशन के तमाम (लगभग 11) मेडिकल कॉलेजों में से डॉ. पांडे का ही शोध कार्य अभी तक प्रकाश में आया है।

रोहतक के सांसद अरविंद शर्मा ने आंखें निकाल देने व हाथ काटने की धमकी दी

मुख्यमंत्री खट्टर लट्ठ उठा लेने वाले बयान को वापस ले चुके हैं

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

बीते लोक सभा चुनाव में हारते हुए अरविंद शर्मा को सरकार ने प्रशासकीय हेराफ़ेरी से चुनाव जितवाया था, यह तथ्य सर्वविदित है। इस नकली जीत में तत्कालीन रोहतक विधायक एवं मंत्री मनीष ग्रोवर की विशेष भूमिका रही थी। अब उस एहसान का बदला चुकाने एवं भाजपा में अपने नम्बर बनाने के चक्कर में अरविंद ने रोहतक में सार्वजनिक मंच से घोषित किया कि जो कोई भी मनीष ग्रोवर की ओर आंख उठा कर देखेगा वे उसकी आंखें निकाल लेंगे और जो हाथ उनकी ओर उठेंगे, उनको काट डालेंगे।

विदित है कि पांच नवम्बर को प्रधान मंत्री मोदी द्वारा उत्तराखंड के केदारनाथ मंदिर में किये जा रहे पाखंड का सीधा प्रसारण देखने के लिये मनीष ग्रोवर अपने कुछ चमचों के साथ गांव कलोई के एक मंदिर में गये थे। वैसे यह बात अभी समझ से परे है कि वह सीधा प्रसारण रोहतक शहर में न दिखा कर कलोई गांव में क्यों दिखाया जा रहा था? जो पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा का गांव है? शायद इस लिये तो नहीं कि इस बहाने भाजपाईयों को गांव में प्रवेश मिल सके? खैर, जो भी हो मनीष एंड कम्पनी गांव के मंदिर में घुस तो गये परन्तु निकलना भारी हो गया। रोहतक व सोनीपत ज़िलों की पुलिस एवं प्रशासन वहां 7-8 घंटे जुटा रहा, लेकिन भाजपाइयों को उग्र किसानों ने तब बख्शा जब उन्होंने मंदिर के छज्जे पर खड़े होकर सार्वजनिक रूप से माफ़ी मांग ली और दोबारा गांव में न घुसने का वायदा किया। वह बात अलग है कि बाद में राजनेताओं का असल चरित्र उजागर करते हुए मनीष ने माफ़ी मांगी जाने से ही इन्कार कर दिया।

अब एक तरफ़ तो मनीष बेचारा माफ़ी मांग कर अपनी जान छुड़ा कर बमुश्किल लौटा है और उधर सांसद

अरविंद अपने तेवर दिख रहा है। ऐसा ही मर्द है तो दोबारा फ़िर से मनीष को वहीं उसी मंदिर में लेकर जाय न, फ़िर देखेंगे कौन किसकी आंखे निकालता है व हाथ काटता है? वह ज़माना एवं परिस्थितियां अलग थीं जब अरविंद ने रोहतक मेडिकल कॉलेज में अपने हॉस्टल में एक युवक को कत्ल कर दिया था। उस कत्ल से तो जैसे-तैसे बच गया था परन्तु अब आंखें निकालना व हाथ काटना तो दूर की बात, यह घोषणा ही उसके लिये भारी पड़ने वाली है। वैसे यूं भी ये भाजपाई वीर थूक कर चाटने में देर नहीं लगाते, हो सकता है वह अपना बका हुआ उक्त बयान वापस लेले, जैसे घोषणावीर खट्टर ने अपना लठ उठाने वाला बयान वापस ले लिया था। परन्तु जबान से निकला शब्द और कमान से निकला तीर कभी वापस नहीं हुआ करता।

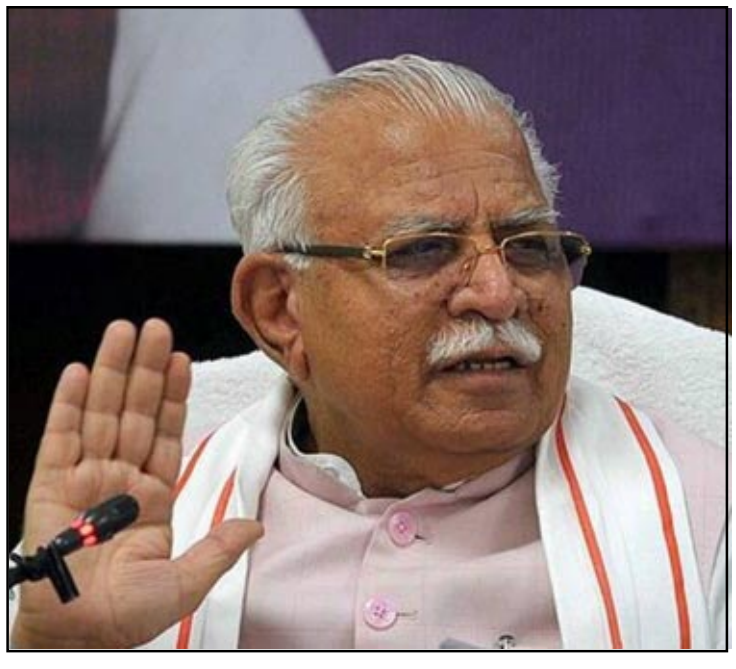

नगर निगम कूड़ा ढोने के लिये 102 वाहन खरीदेगा

सड़कों की दुर्दशा व खुले मैनहोल की चिन्ता नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) इसी सप्ताह निगमायुक्त यशपाल यादव ने घोषित किया है कि शहर से कूड़ा उठाने की समस्या हल करने के लिये 102 नये वाहन खरीदे जायेंगे। यहां प्रश्न उठता है कि क्या 102 वाहनों की कमी के चलते ही शहर कूड़े व गंदगी से सड़ रहा है। दूसरा प्रश्न ये उठता है कि एक दशक पहले खुल्लर ने बतौर निगमायुक्त जो सैकड़ों वाहन खरीद कर खड़े कर दिये थे, जिनका वर्षों तक कोई इस्तेमाल नहीं हो पाया था, वे सब यकायक कहां खो गये? तीसरा सवाल यह भी बनता है कि जिस इको ग्रीन कंपनी को करोड़ों रुपये में कूड़ा उठाने का ठेका दिया गया है क्या उसके लिये वाहन भी निगम ही खरीद कर देगा।

समझ में नहीं आता कि निगम की प्राथमिकता में वाहन खरीदना ही क्यों है? जबकि आये दिन नागरिक खुले मैनहोलों में गिर कर अपनी जान से खेलने को मजबूर हैं, छुट्टे घूमते आवारा पशुओं ने नागरिकों का जीना मुहाल कर रखा है, शहर में कोई सड़क ऐसी नजर नहीं आती जिसे सड़क कहा जा सके। खड्डों में पड़ी सड़कों से वाहनों को होने वाली करोड़ों रुपये की क्षति भले ही नगर निगम को नज़र न आती हो परन्तु उनसे उठने वाले धूल के गुबार, जो स्मॉग बन कर वातावरण को निरन्तर प्रदूषित किये रहते हैं, नजर क्यों नहीं आता? लगता है कि यह सब नगर निगम की प्राथमिकता तो क्या किसी भी श्रेणी में नहीं आता।

102 वाहनों की खरीद के पीछे एक और बड़ा मकसद यह भी समझा जा रहा है कि करोड़ों रुपये की इस खरीद से शासन-प्रशासन चलाने वालों को एक मुश्त मोटा कमीशन उपलब्ध हो जायेगा। इस शहर ने एक वक्त वह भी देखा है जब कूड़ा उठाने को कोई वाहन नहीं होते थे, चंद गिने-चुने सफाईकर्मी बड़ी मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी करते थे। वे अपनी सेवा शर्तों से संतुष्ट रहते थे। और शहर उनकी सेवा से। इसके विपरीत आज सैकड़ों वाहन व हजारों सफ़ाईकर्मी होने के बावजूद शहर सड़ रहा है। और तो और 20 किलोमीटर दूर बन्धवाड़ी गांव तक को भी डंपिंग साइट में बदल कर कूड़े से सड़ा दिया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06